# दिनांक 07-02-1974 की अव्यक्त वाणी पर आधारित मुरली कविता

## सन्तुष्टता ही सम्पूर्णता की निशानी है व निश्चय रूपी आसन पर अचल स्थिति

बच्चों अपने फीचर्स और फ्यूचर को तुम जानो
सम्पूर्णता के करीब आने की निशानी पहचानो

सदा सन्तुष्ट रहकर जो औरों को सन्तुष्ट कराए
सम्पूर्णता की निशानी सिर्फ उसको नजर आए

सूक्ष्म स्नेह और आशीर्वाद जितना तुम पाओगे
उतने ही तुम सम्पूर्णता के करीब आते जाओगे

असन्तुष्ट आत्मा भी आपसे सन्तुष्ट होकर जाए
सन्तुष्टमणि का सर्टिफिकेट औरों से मिल जाए

सबको सन्तुष्ट करने का यही तरीका अपनाओ
परिस्थिति अनुसार खुद को मोल्ड करते जाओ

निश्चय रूपी आसन को अचल अडोल बनाओ
निश्चय बुद्धि रहकर खुद को विजयन्ति बनाओ

बाप के निश्चय का स्वरूप स्पष्ट रीति पहचानो
बाप से मिले ज्ञान के अनुभव को भी पहचानो

अलौकिक ब्राह्मण जीवन की कीमत पहचानो
श्रेष्ठ पुरुषोत्तम चढ़ती कला के समय को जानो

अपने निश्चय का प्रतिशत प्रतिदिन तुम बढ़ाना
हर छोटी से छोटी कमी को जड़ से तुम मिटाना

सतोप्रधान बनकर तुम सबकी नजरों में आओ
अपने महान संस्कारों से विश्व में प्रसिद्धि पाओ